निदेशकों की रिपोर्ट

प्रबधन विवेचन एवं विश्लेषण

आर्थिक पृष्ठभूमि और बैंकिंग परिवेश :

वर्ष 2006 में 5.0% और वर्ष 2007 में 4.9% जीडीपी की वैश्विक वृद्धि दर के पश्चात्, वर्तमान वित्तीय संकट की पृष्ठभूमि में, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान है कि वर्ष 2008 के दौरान वैश्विक जीडीपी वृद्धि दर घटकर 3.7% के स्तर पर आ जाएगी। यूएस के सब-प्राइम मार्गेज संकट से उत्पन्न, विकसित देशों के वित्त बाजारों में आई हलचल ने वित्तीय लाभों को घटा दिया है, ऋण उपलब्धता को कम किया है और नकारात्मक धन प्रभावों के कारण, विकसित देशों खास तौर से यूएसए में उपभोक्ता-प्रवृत्ति पर खतरा मंडराने लगा है। खाद्यान्नों एवं पण्यों के मूल्य के कारण मुद्रास्फीति पर लगातार बढ़ते दबाव के साथ-साथ कच्चे तेल की अस्थिर और बढ़ती कीमतें विश्व अर्थव्यवस्था के लिए कुछ अन्य खतरे हैं।

भारत दुनिया की सर्वाधिक द्रुत गति से विकसित हो रही अर्थव्यवस्थाओं में अग्रणी बना रहा । वर्ष 2007-08 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार पांचवें वर्ष अपनी सशक्त वृद्धि को बनाए रखने में सफल रही है। वर्ष 2007-08 के लिए अनुमानित जीडीपी वृद्धि दर 8.7% है, जो वर्ष 2003-04 से 2007-08 के पांच वर्षों की औसत जीडीपी वृद्धि दर 8.7% के अनुरूप है । कृषि और संबद्ध गतिविधियों में 2007-08 के दौरान 2.6% की दर से वृद्धि की उम्मीद है जो 2000-01से 2007-08 की अवधि के दौरान कृषि क्षेत्र की 2.6% की औसत वृद्धि दर के बराबर है। वित्तीय वर्ष 2008 के दौरान खाद्यान्न का उत्पादन रिकार्ड उच्च स्तर पर पहुँच गया। खाद्यान्न का उत्पादन 221.5 मि. टन के लक्ष्य को पार करके 227.3 मिलियन टन हो गया और इस प्रकार पिछले वर्ष की तुलना में इसमें 4.6% की वृद्धि हुई। वर्ष 2007-08 के दौरान औद्यौगिक उत्पादन 8.6% रहा जो पिछले वर्ष के 10.6% की तुलना में मामूली सा कम है। वर्ष 2007-08 के दौरान 10.6% की वृद्धि दर के साथ सेवा-क्षेत्र ने दो अंकीय वृद्धि दर को बनाए रखा जो दीर्घावधि (2000-01 से 2007-08) औसत 8.9% से अधिक है। सेवा क्षेत्र के अंतर्गत सेवाओं, परिवहन संचार तथा वित्तीय सेवाओं ने अंतिम दो वर्षों की अवधि के लिए दहाई के आंकड़े में वृद्धि दर बनाए रखी और उम्मीद है कि यह वृद्धि दर जारी रहेगी। व्यापार और होटल व्यावसाय ने 2006-07 के 11.8% की तुलना में बेहतर निष्पादन प्रदर्शित करते हुए 12.1% की वृद्धि दर दर्ज की। वृद्धि को प्रोत्साहन और ऊर्जा प्रदान करने वाला एक अन्य उल्लेखनीय पहलू विगत वर्षों के दौरान बचत और विनिधान गतिविधियों में उच्च वृद्धि दर रहा जो 2006-07 में बढ़कर क्रमश: 34.8% और 35.9% हो गई।

वित्त वर्ष के समाप्ति पर खाद्यान्न, धातुओं और कच्चे तेल की कीमतों में वैश्विक वृद्धि के कारण मुद्रास्फीति की दर में बढ़ोतरी हुई। थोक मुद्रा सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति - वर्ष के आरंभिक 6.4% के स्तर से घटकर अक्तूबर 2007 के मध्य में 3.1% के स्तर पर आ गई। इस घटोतरी का एक कारण मूलभूत खाद्यान्नों की कीमतों में गिरावट और विनिर्मित उत्पादों की कीमतों में नरमी था। नवम्बर 2007 के दौरान 3% के आसपास रहत हुए यह दिसम्बर 2007 के शुरुआती दिनों से इसमें वृद्धि शुरू हुई और 29 मार्च 2008 को यह 7.4% के स्तर पर पहुंच गई। इसका प्रमुख कारण फलों और सब्जियों, तिलहन, कपास, लोहे के साथ-साथ खाद्य तेलों/खली आधारभूत धातुओं की कीमतों में वृद्धि था। इस वृद्धि का एक कारण अंतर्राष्ट्रीय पण्यों की कीमत में भी वृद्धि था तथापि, मुद्रास्फीति को नियंत्रित करके उच्च विकास दर बनाए रखने के लिए वित्तीय और मौद्रिक उपाय किए जा रहे हैं।

रुपये की कीमतों में वृद्धि के बावजूद निर्यात के क्षेत्र में पिछले वर्ष के चावल, कपास, परिवहन-पुर्जों, आदि का विशेष योगदान रहा। भारत द्वारा यूएसए को निर्यात में कमी आई - जब कि यूएसए भारतीय सामानों का सबसे बड़ा आयातक है - लेकिन यूएई और चीन को हुए भारतीय निर्यातों में भारी वृद्धि हुई। इसी अवधि के दौरान आयातों में पिछले वर्ष के 24.5% की तुलना में 27.0% की वृद्धि हुई - जिसका प्रमुख कारण अधिक तेल और गैर तेल आयात, पूंजीगत सामान, रसायनों और संबंधित उत्पादों, खाद्य तेलों, स्वर्ण, चांदी, मोती और बहुमूल्य और अर्ध बहुमूल्य पत्थरों के आयात में वृद्धि था। निर्यात की तुलना में आयात की मात्रा में अधिकता होने के कारण वर्ष 2007-08 के दौरान व्यापार घाटा 35.5% की दर से बढ़कर 80.4 बिलियन अमेरिकी डालर हो गया - जब कि पिछले वर्ष यह 59.3 बिलियन अमेरिकी डालर था।

वर्ष के दौरान भारतीय रिज़र्व बैंक की मुद्रा और ऋण नीति का पूरा झुकाव मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करने और वित्त व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने के साथ-साथ निरंतर द्रुततर वृद्धि दर बनाए रखना, वित्तीय समावेशन के साथ ऋण की गुणवत्ता और ऋण के वितरण पर बल देना रहा।

वर्ष 2007-08 के दौरान बैंक दर, रेपो और रिवर्स रेपो दरों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। अर्थ व्यवस्था में चलनिधि का प्रबंध

Directors' Report

Management Discussion and Analysis

Economic Backdrop and Banking Environment

After growing at 5.0% in 2006 and 4.9% in 2007, IMF estimates global GDP growth to decelerate to 3.7% in 2008 in the wake of the current financial crisis. The financial market turbulence in developed economies following the US sub-prime mortgage crisis has reduced financial leverage, lowered credit availability and negative wealth effects have emerged as risks to consumption and growth in advanced economies, especially in the US. Continuing inflationary pressures from food and commodity prices as well as high and volatile crude oil prices are other risks being faced by the global economy.

India continued to be one of the fastest growing economies of the world. During 2007-08, the Indian economy grew at a robust pace for the fifth consecutive year. Real GDP growth, estimated at 8.7% in 2007-08, is in tune with the average annual GDP growth of 8.7% in the five year period 2003-04 to 2007-08. Agriculture and allied activities are estimated to grow by 2.6% in 2007-08, which is in line with the average growth of 2.6% per annum during 2000-01 to 2007-08. Foodgrains production touched a record high in FY08, with total foodgrains production placed at 227.3 million tonnes, surpassing the target of 221.5 million tonnes and recording an increase of 4.6% over the previous year. Industrial growth at 8.6% during 2007-08 has moderated somewhat against 10.6% in the previous year. The services sector maintained its double-digit growth at 10.6% during 2007-08, higher than the long term average of 8.9% (2000-01 to 2007-08). Within services, transport and communications and financial services recorded double-digit growth for the last two years and are expected to maintain the growth momentum. Trade and hotels showed higher growth of 12.1% in 2007-08 against 11.8% growth in 2006-07. Another positive feature underpinning growth is the sharp rise in the rate of savings and investment in recent years, which rose to 34.8% and 35.9% respectively in 2006-07.

Towards the close of the fiscal year, higher inflation rate was noticed due to rise in global prices of food, metals and crude oil. Inflation based on WPI declined from 6.4% at the beginning of the fiscal year to a low of 3.1% by mid-October 2007, partly reflecting moderation in the prices of some primary food articles and manufactured products. After hovering around 3% during November 2007, inflation began to edge up from early December 2007 to touch 7.4% by 29 March 2008, mainly reflecting hardening in prices of primary articles such as fruits and vegetables, oilseeds, raw cotton and iron ore, as well as fuel and manufactured products such as edible oil/oil cakes and basic metals, partly due to international commodity price pressures. However, fiscal and monetary measures are being taken to contain inflation and maintain high growth.

Despite Rupee appreciation, exports continued to show a healthy growth, rising by 23% in dollar terms during 2007-08 against 22.6% in the previous year. Overall exports growth was driven by petroleum and crude products, gems and jewellery, iron ore, non-basmati rice, cotton, transport equipment, etc. While India's exports to USA, its single largest trading partner, showed deceleration, exports to UAE and China remained robust. In the same period, imports increased by 27.0% against 24.5%, mainly due to higher oil imports; non-oil imports were led by capital goods, chemicals and related products, edible oils, gold, silver and pearls, precious and semi-precious stones. Due to higher growth in imports than exports, the trade deficit widened by 35.5% to US$ 80.4 bn during 2007-08 from US$ 59.3 bn in the previous year.

The overall stance of RBI's monetary and credit policy during the year was to ensure price stability and financial system stability along with continuation of the growth momentum, emphasis on credit quality and credit delivery including financial inclusion. During 2007-08, the Bank Rate,

करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक ने आरक्षित नकदी निधि अनुपात में चार बार अप्रैल, अगस्त और नवंबर 2007 में वृद्धि कर 6% से बढ़ाकर 7.5% कर दिया। चलनिधि की स्थिति को देखते हुए वर्ष के दौरान प्रमुख बैंको ने मूलउधार दर और जमा दरों में वृद्धि की। उधार दर पिछले वित्तीय वर्ष के 12.25-12.50% से 50 आधार अंक बढ़ाकर 12.25-12.75% जमा दर एक वर्ष से अधिक परिपक्तता अवधि वाली 7.5-9.0% की गई। तथापि, अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर को द्रुत बनाए रखने के लिए कुछ बैंकों ने फरवरी 2008 के महीने में मूल उधार दर और 20 लाख रुपये से कम के आप्रास ऋणों की ब्याज दर में कटौती की घोषणा की।

मुद्रास्फीति और मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक की कठोर मुद्रा नीति का ऋण वृद्धि दर पर असर हुआ जो वर्ष 2007-08 में 21.6% रही जब कि वर्ष 2006-07 में यह 28.1% रही थी। जमा वृद्धि दर भी नरम रहा। यल 2007-08 में 22.2% जबकि वर्ष 2006-07 में यह 23.8% रही थी।

विश्व की प्रमुख अर्थ व्यवस्थाओं मे मंदी के बावजूद चालू वर्ष में भारत की अर्थ व्यवस्था निवेश की अच्छी स्थिति के चलते निरंतर लगभग 8-8.5% की दर हो बढ़ेगी। सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा मूल्य नियंत्रण के लिए किए गए अनेक वित्तीय और मौद्रिक उपायों के कारण मुद्राफीति के मार्च 2009 तक घटकर 5-5.5% के बीच आ जाने की संभावना है।

वित्तीय निष्पादन

लाभ

वर्ष 2006-07 के रु. 9,999.94 करोड़ की तुलना में वर्ष 2007-08 के दौरान बैंक का परिचालन लाभ रु. 13,107.55 करोड़ रहा और इस प्रकार इसमें 31.08% की वृद्धि हुई। वर्ष 2007-08 के दौरान बैंक का निवल लाभ 48.18% की दर से बढ़कर पिछले वर्ष के रु. 4,541.31 करोड़ की तुलना में रु. 6,729.12 करोड़ हो गया।

निवल ब्याज आय में 13.04% की वृद्धि हुई और अन्य आय में 28.52% की वृद्धि हुई। परिचालन व्ययों में 6.64% की बढ़ोत्तरी हुई।

लाभांश

बैंक ने लाभांश बढ़ाकर 215% कर दिया।

निवल ब्याज आय

बैंक की निवल ब्याज आय में 13.04% की वृद्धि हुई और यह 2006-07 के रु. 15,058.20 करोड़ से बढ़कर वर्ष 2007-08 में 17,021.23 करोड़ हो गई। यह अग्रिमों पर ब्याज-आय में वृद्धि का परिणाम था। वर्ष 2007-08 के दौरान निवल ब्याज मार्जिन 3.07% के संतोषजनक स्तर पर रहा।

वैश्विक परिचालनों से वर्ष के दौरान सकल ब्याज आय रु. 37,242.33 करोड़ से बढ़कर रु. 48,950.31 करोड़ हो गई। ऐसा प्रमुखत: अग्रिमों पर उच्च ब्याज आय के कारण हुआ।

भारत में अग्रिमों पर ब्याज आय 2006-07 के रु. 22,872.66 करोड़ से बढ़कर वर्ष 2007-08 के दौरान रु. 32,162.68 करोड़ हो गयी। इसका कारण अग्रिमों की मात्रा में वृद्धि रही। इसके अतिरिक्त भारत में अग्रिमों पर प्रतिलाभ 2006-07 के 8.67% से बढ़कर 2007-08 के दौरान 9.90% हो गया। विदेशी कार्यालयों में ऋण-मात्रा में वृद्धि के कारण अग्रिमों की ब्याज आय में वृद्धि हुई।

औसत प्रतिलाभ में गिरावट के बावजूद भारत में राजकोषीय परिचालन से आय में 11.3% की वृद्धि हुई क्योंकि लगाए गए औसत संसाधनों की मात्रा अधिक थी। औसत प्रतिफल वर्ष 2006-07 के 6.99% से घटकर 2007-08 में 6.92% हो गया।

वैश्विक परिचालनों का कुल ब्याज व्यय 2006-07 के रु. 22,184.14 करोड़ से बढ़कर 2007-08 में रु. 31,929.08 करोड़ हो गया। भारत में जमा राशियों पर ब्याज-व्यय में 2007-08 के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में 45.56% की वृद्धि हुई जबकि भारत में जमा राशियों के स्तर में 22.9% की वृद्धि हुई। इस कारण जमा राशियों की औसत लागत वर्ष 2006-07 के 4.69% से बढ़कर 2007-08 में 5.59% हो गई।

गैर-ब्याज आय

गैर ब्याज आय 2006-07 के रु. 6,725.26 करोड़ से बढ़कर रु. 8,694.93 करोड़ हो गई।

वर्ष के दौरान बैंक ने भारत और विदेश में अपने सहयोगी बैंकों / अनुषंगियों और संयुक्त उद्यमों से लाभांश के रूप में रु. 197.41 करोड़ प्राप्त किए (पिछले वर्ष रु. 598.12 करोड़)।

परिचालन व्यय

स्टाफ लागत में 1.84% की मामूली कमी आई और यह 2006-07 के रु. 7,932.58 करोड़ से घटकर रु. 7,785.87 करोड़ हो गया। स्टाफ लागत में वेतन मद की रु. 575.00 करोड़ की बकाया राशि थी। आय परिचालन व्ययों में भी 23.94% की वृद्धि हुई जिसका कारण भाड़े,

Repo and Reverse Repo rates were kept unchanged. To manage the liquidity in the economy, RBI raised the Cash Reserve Ratio four times: in April, August and November 2007 from 6% to 7.50%. In line with liquidity tightening, PLRs and deposit rates of major banks were hiked during the year. While lending rates rose to 12.25-12.75% from 12.25-12.50%, deposit rates (for more than one year maturity) rose to 8.25-9.0% from 7.5-9.0% in the previous financial year. However, in the month of February 2008, to keep up the growth momentum in the economy, some banks announced cuts in their PLR and interest rate on housing loans below Rs.20 lakh.

The tight monetary policy followed by RBI to control inflation and money supply had a moderating impact on credit growth, which increased by 21.6% in 2007-08 against 28.1% in 2006-07. Deposit growth also moderated to 22.2% in 2007-08 from 23.8% in 2006-07.

For the current year, despite slowdown in the major economies of the world, the Indian economy will continue to grow at 8-8.5% driven by investment. Due to a number of fiscal and monetary measures taken by the Government and RBI to put a check on prices, inflation is expected to come down to 5-5.5% by March 2009.

Financial Performance

Profit

The Operating Profit of the Bank for 2007-08 stood at Rs. 13,107.55 crore as compared to Rs.9,999.94 crore in 2006-07, registering a growth of 31.08%. The Bank has posted a Net Profit of Rs 6729.12 crore for 2007-08 as compared to Rs.4,541.31 crore in 2006-07, registering a growth of 48.18%.

While Net Interest Income recorded a growth of 13.04% and Other Income increased by 28.52%. Operating Expenses increased by 6.64%.

Dividend

The Bank has increased dividend to 215%.

Net Interest Income

The Net Interest Income of the Bank registered a growth of 13.04% from Rs.15,058.20 crore in 2006-07 to Rs. 17,021.23 crore in 2007-08. This was due to growth in interest income on advances. The Net Interest Margin was at a healthy 3.07% in 2007-08.

The gross interest income from global operations rose from Rs. 37,242.33 crore to Rs. 48,950.31 crore during the year. This was mainly due to higher interest income on advances.

Interest income on advances in India registered an increase from Rs.22,872.66 crore in 2006-07 to Rs 32,162.68 crore in 2007-08 due to higher volumes. Also average yield on domestic advances increased from 8.67% in 2006-07 to 9.90% in 2007-08. Interest income on advances at foreign offices also increased due to higher volumes.

Income from resources deployed in Treasury operations in India increased by 11.03% despite decline in average yield mainly due to higher average resources deployed. The average yield, which was 6.99% in 2006-07, declined to 6.92% in 2007-08.

Total interest expenses of global operations increased from Rs.22,184.14 crore in 2006-07 to Rs. 31,929.08 crore in 2007-08. Interest expenses on deposits in India during 2007-08 recorded an increase of 45.56% compared to the previous year, whereas the average level of deposits in India grew by 22.09%. This resulted in increase in the average cost of deposits from 4.69% in 2006-07 to 5.59% in 2007-08.

Non-Interest Income

Non-interest income stood at Rs.8,694.93 crore as against Rs.6,725.26 crore in 2006-07.

During the year, the Bank received an income of Rs. 197.41 crore (Rs.598.12 crore in the previous year) by way of dividends from Associate Banks/ subsidiaries and joint ventures in India and abroad.

Operating Expenses

There was marginal decline of 1.84% in the Staff Cost from Rs.7,932.58 crore in 2006-07 to Rs 7,785.87 crore in 2007-08. Staff Cost included an amount of Rs.575.00 crore towards Wage arrears.